Vivek Sir

Date 6/4/2020
Page ①

Social - Cultural change in India
Core Course - C4

Topic - Westernization (पश्चिमीकरण)

Introduction (परिचय) —

श्रीनिवास के अनुसार भारतीय समाज में परिवर्तन से संबंधित एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया पश्चिमीकरण है। श्रीनिवास ने सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख स्रोत व्यवस्था के अन्दर व बाहर पाये जाने पर विश्वास किया। इसी कारण व्यवस्था के अन्तर्गत वास्तविक व आकांक्षित गतिशीलता को संस्कृतीकरण व बाह्य पश्चिमी देशों के सम्पर्क के परिणामस्वरूप आये परिवर्तनों को पश्चिमीकरण की संज्ञा दी। भारतीय समाज में पश्चिमीकरण की प्रक्रिया ब्रिटिश शासन-काल में आरंभ हुई। श्रीनिवास ने 'पश्चिमीकरण' शब्द का उपयोग भारतीय समाज व संस्कृति में उन परिवर्तनों के प्रयुक्त किया है जो एक सौ पचास वर्षों से अधिक समय में अंग्रेजी राज्य के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए एवं यह शब्द प्रौद्योगिकी, संस्थाओं, विचारधारा व मूल्यों आदि विभिन्न स्तरों पर होने वाले परिवर्तनों का द्योतक है।"

एवरी लिन्च (Lynch) के अनुसार 'पश्चिमीकरण के अन्तर्गत पश्चिमी पोशाकें, खानपान, तौर-तरीके, शिक्षा विधियाँ एवं खेलकूद, मूल्य आदि शामिल हैं। पश्चिमीकरण की संकल्पना भारत में सम्पन्न होने वाले उन सभी सांस्कृतिक एवं संस्थात्मक परिवर्तनों पर प्रकाश डालती है, जो पश्चिमी देशों के साथ राजनीतिक व सांस्कृतिक सम्पर्क के परिणामस्वरूप दृष्टिगोचर हुए हैं। वस्तुतः ब्रिटिश शासन ने भारतीय परिवेश में नवीन

प्रौद्योगिकी, औद्योगीकरण, मशीनीकरण, यातायात एवं संचार के नवीन साधन, आधुनिक शिक्षा, नवीन न्याय व्यवस्था, फौज एवं पुलिस, नगरीकरण, नवीन विज्ञान का आविष्कार, आधुनिकीकरण, समानता एवं स्वतंत्रता तथा आधुनिक प्रजातंत्र से अवगत कराया। परिवर्तन के इन कारकों के सतत सम्पर्क से भारतीय वेश-भूषा, खानपान, रहन-सहन, प्रथायें, रीतिरिवाज, संस्थायें, धर्म, कला, संगीत, आदर्श, मूल्य, विश्वास आदि में अनेक परिवर्तन हुये, जहाँ हम पश्चिमीकरण की संज्ञा देते हैं।

अतः संक्षेप में पश्चिमीकरण परिवर्तन की उस प्रक्रिया को कह सकते हैं जो पश्चिमी संस्कृति के सम्पर्क के विभिन्न पक्षों पर पड़े, जिनकी शुरुआत ब्रिटिश शासकों के भारत आगमन के साथ ही सम्भव हुई। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात पश्चिमीकरण की प्रक्रिया भी तेज हुई है। प्रारंभ में ऐसा प्रतीत होता था कि यह प्रक्रिया उच्च वर्ग तक ही सीमित है क्योंकि उनके पास प्रक्रिया को अपनाने के अधिक साधन हैं, किन्तु वर्तमान समय में समाज के समस्त वर्ग व जातियाँ इससे प्रभावित हैं।

Characteristic of Westernization (पश्चिमीकरण की विशेषताएँ)

प्रो० एम० एन० श्रीनिवास (मैसूर नरसिंहाचार श्रीनिवास) ने प्रमुखतया पश्चिमीकरण की निम्न विशेषताओं की चर्चा की है—

(1) नैतिक रूप से तटस्थ—

पश्चिमीकरण की प्रक्रिया

Scanned with CamScanner

नैतिकता के तथ्य होना कोई आवश्यक नहीं है, इसलिए यह नहीं दर्शाती है कि पश्चिमीकरण के प्रभाव के कारण उत्पन्न परिवर्तन अच्छे या बुरे। पश्चिमीकरण की प्रक्रिया मात्र परिवर्तनों को इंगित करती है, यह अवधारणा अच्छे या बुरे मूल्यों से सम्बन्धित नहीं है। अतः पश्चिमीकरण की प्रक्रिया पूर्णतः नैतिक रूप से तटस्थ है।

② एक व्यापक अवधारणा –

यह एक व्यापक अवधारणा है, जिसके अंतर्गत भौतिक एवं अभौतिक संस्कृति से सम्बन्धित विभिन्न तथ्य शामिल है। इसके अन्तर्गत प्रौद्योगिकी, धर्म, समाज, राजनीति, प्रथाओं, आदर्श, विश्वास, मूल्यों, फैशन, खानपान, रहन-सहन यातायात, संचार, कला, शिक्षा, न्याय प्रशासन आदि से सम्बन्धित समस्त परिवर्तन शामिल है, जो पश्चात्य संस्कृति के सम्पर्क के परिणामस्वरूप सम्पन्न हुये।

③ एक वैज्ञानिक अवधारणा।

पश्चिमीकरण की संकल्पना, मूल्य एवं नैतिकता के दृष्टिकोण से तटस्थ है। अतः सामाजिक परिवर्तनों को समझाने एवं विश्लेषण करने हेतु यह एक वैज्ञानिक अवधारणा है। यह संकल्पना जीवन के विभिन्न पहलुओं पर पड़े प्रभाव को सम्मिलित रूप में या भिन्न कर देखी जा सकती है।

④ अनेक प्रारूप

पश्चिमीकरण की संकल्पना के तहत

Scanned with CamScanner

मात्र ब्रिटिश आदर्श ही महत्वपूर्ण नहीं हैं। इसमें अमरीकी, रूसी व अन्य पाश्चात्य राष्ट्रों के प्रारूप भी देखे जा सकते हैं, जिन्हें समय-समय पर भारतीय समाज ने सम्पर्क में आने के परिणामस्वरूप अपनाया है। अतः कोई एक आदर्श प्रारूप न होकर अनेक प्रारूपों का सम्मिश्रण देखने को मिलता है।

(5) जटिल एवं बहुस्तरीय प्रक्रिया

प्रो० श्रीनिवास का मत है कि पश्चिमीकरण एक जटिल प्रक्रिया है, जिसका प्रभाव भारतीय सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, प्रौद्योगिक व अन्य स्तरों पर देखा जा सकता है। भारतीय समाज के भिन्न-भिन्न स्तरों एवं पक्षों पर पश्चिमीकरण का प्रभाव भिन्न-भिन्न रहा है। कुछ लोगों ने खान-पान व पोशाकों आदि को ही मात्र अपनाया तो कुछ ने सम्बन्धित मूल्यों, आदर्शों, विश्वासों आदि को तो कुछ लोगों ने प्रौद्योगिकी को अंगीकार किया है। अतः पश्चिमीकरण की प्रक्रिया जटिल व बहुस्तरीय प्रक्रिया है।

(6) चेतन व अचेतन प्रक्रिया

पश्चिमीकरण की प्रक्रिया भारतीय समाज पर चेतन एवं अचेतन दोनों प्रकार से प्रभावी रही है, क्योंकि कुछ पश्चात्य तथ्यों को हमने अपने दैनिक जीवन में जानते-समझते हुए स्वीकारा है तो कुछ तथ्य अप्रत्यक्ष एवं अचेतन रूप से प्रभावित करने में सक्षम रहे हैं एवं हमारे दैनिक जीवन, व्यवहार एवं जीवनशैली का अंग बन जाते हैं।

Scanned with CamScanner